International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

राजनीति विज्ञान जगत में एक नया अनुशासन : राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र

Vishal Sharma
(Ph. D. Research Scholar Department of Political Science)
Bundelkhand University, Jhansi, Uttar Pradesh, India.
E-mail - pt.vishalsharma2023@gmail.com

शोध-सार

भारतीय ज्ञान परम्परा का अध्ययन बहुत विस्तृत है। भारतीय संस्कृति ने ब्रह्माण्ड के अध्ययन को प्रकृति का अध्ययन माना और जीवन को सरल एवं आसान बनाने के लिए जीवन की व्यवस्था को प्रकृति के समानान्तर बनाए रखने का सफल प्रयास किया। समग्र प्रकृति का एक हिस्सा ब्रह्माण्ड है। ब्रह्माण्ड को समझने के लिए भारतीय संस्कृति ने एक अनोखे विषय ज्योतिष शास्त्र को जन्म दिया। इस विषय के अनुरूप मानव जीवन पर या यह कहें कि पृथ्वी पर अन्तरिक्ष में विचरण करने वाले ग्रहों-उपग्रहों का क्या प्रभाव पड़ता है ? इसका अध्ययन उन्होंने ज्योतिष शास्त्र के रूप में किया। राज्य-व्यवस्था अर्थात सामुदायिक नियमों के लिए राजशास्त्र अर्थात राजनीति शास्त्र को जन्म दिया। राजनीति शास्त्र कभी 'धर्मशास्त्र' का हिस्सा हुआ करता था और वर्तमान में स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में राजनीति शास्त्र के नाम से जाना जाता है। इस शोध-पत्र का मुख्य विषय राजनीति शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र को मिलाकर एक नए स्वतन्त्र अनुशासन **'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र'** को अस्तित्व में लाना है। इस शोध पत्र में 'आगमनात्मक शोध-पद्धति' का प्रयोग किया गया है। शोध-विषय के विवेचन में प्राचीन एवं आधुनिक दोनों ही साहित्य का प्रयोग किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्द

'पर्यावरण', 'दर्शन शास्त्र', 'राजनीति शास्त्र', 'ज्योतिष शास्त्र', 'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र', 'धर्म शास्त्र', 'धर्म शास्त्र के नियम'

शोध-पत्र में प्रयुक्त कठिन शब्द और उनके अर्थ

ज्योतिष- वेद का नेत्र, **पिण्ड-** पदार्थों का सघन रूप, **संहिता-** संयोग/संग्रह, **राशि-** मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन, **ग्रह-** सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु।

शोध-प्रविधि

आगमनात्मक शोध पद्धति

शोध-पत्र का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र राजनीति शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र के संयोग से एक नए विकसित होते स्वतन्त्र अनुशासन **'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र'** की भूमिका पर लिखा गया है। भारतीय संस्कृति अति प्राचीन

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

संस्कृति है। भारतीय संस्कृति अर्थात सनातन संस्कृति में सदैव से ही प्रकृति को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। समग्र प्रकृति के अध्ययन का मूल विषय दर्शन शास्त्र है। कालान्तर में यही दर्शन शास्त्र अध्ययन की कई शाखाओं में विभक्त हुआ। वर्तमान में वही शाखाएं स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में विकसित हो गई हैं। ज्योतिष शास्त्र और राजनीति शास्त्र को मिलाकर एक नए अनुशासन **'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र'** को प्रतिपादित करना प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

शोध-पत्र की रूपरेखा

- **परिचय**
- **राजनीति विज्ञान**
- **ज्योतिष शास्त्र**
- **राजनीति विज्ञान और ज्योतिष शास्त्र में सम्बन्ध**
- **राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की परिकल्पना**
- **निष्कर्ष**

परिचय

"क्या, क्यों और कैसे" इन प्रश्न-कारक शब्दों ने कितनी ही परिकल्पनाओं को जन्म दिया है। इन्हीं परिकल्पनाओं के आधार पर जब **'खोज और शोध'** की यात्रा आरंभ होती है तब ज्ञान का सृजन होता है। एक परिकल्पना के सहारे हमने भी एक खोज और शोध की यात्रा आरम्भ की। तभी एक प्रश्न हमारे मस्तिष्क में आता है। **विकास क्या है ?** ये एक ऐसा प्रश्न है जिसके उत्तर की तलाश ने हमें एक और प्रश्न की तरफ भेज दिया। अविष्कार क्या है ? ये प्रश्न पहले से ज्यादा जटिल है। इस प्रश्न के उत्तर की तलाश में अविष्कार की माँ से हमारा मिलना हुआ – कहते हैं, **"आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है।"** अब फिर से हमारे मस्तिष्क में एक प्रश्न ने जन्म लिया। **'अविष्कार की आवश्यकता क्यों है।'** इस प्रश्न के उत्तर की तलाश ने हमारा ध्यान पर्यावरण की तरफ खींचा। अब हमें समझ आने लगा कि पर्यावरण में होने वाले परिवर्तन ही **'आवश्यकता'** को जन्म देते हैं। इन्हीं आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए मनुष्य ने सदैव ही पर्यावरण के साथ सन्तुलन बनाने के लिए प्रकृति को नजदीक से समझने का प्रयास किया है। **'प्रकृति ही पर्यावरण की जननी है, पर्यावरण आवश्यकता की जननी है और आवश्यकता अविष्कार की जननी है।'** यहाँ **'पर्यावरण'** का क्षेत्र असीमित है क्योंकि यहाँ प्रकृति को सम्पूर्ण रूप में समझने की बात कही गई है। प्रकृति के अध्ययन में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आ जाता है। प्राचीनकाल से ही प्रकृति का अध्ययन **'दर्शन शास्त्र'** के रूप होता रहा है। कालान्तर में प्रकृति के अध्ययन के लिए दर्शन शास्त्र कई शाखाओं के रूप में विकसित हुआ। वर्तमान में वही शाखाएं स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में विकसित हो चुकी हैं जैसे – इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, आयुर्वेद, गणित इत्यादि।

कालान्तर में विकसित हुई मानव सभ्यताओं ने स्वयं के विकास में दर्शन शास्त्र की इन्हीं शाखाओं का प्रयोग किया। जब मनुष्य संगठित रूप में रहने लगा तब सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए **'धर्म शास्त्र के नियम'** प्रयोग करता था। वर्तमान में वही 'धर्म शास्त्र के नियम' राजनीति शास्त्र के रूप में विकसित हो चुके हैं। राजनीति शास्त्र, सामुदायिक नियम बनाते समय दर्शन शास्त्र की

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

अन्य शाखाओं का भी सहारा लेता है और नवीनतम प्रयोग करता रहता है। वर्तमान में राजनीति शास्त्र अन्तरिक्ष का अध्ययन करने वाले शास्त्रों का सहारा लेकर स्वयं को विकसित करने का प्रयास कर रहा है। अन्तरिक्ष का अध्ययन करने वाले शास्त्रों में **'ज्योतिष शास्त्र और खगोल शास्त्र'** प्रमुख शास्त्र हैं। राजनीति शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र से मिल कर स्वयं को **'राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र'** के रूप विकसित कर रहा है।

राजनीति विज्ञान

राजनीति शास्त्र क्या है ? इसके अध्ययन का क्षेत्र क्या है ? इसे इस प्रकार समझ जा सकता है। "राजनीति शास्त्र राज्य तथा सरकार-सम्बन्धी प्रश्नों का वैज्ञानिक अध्ययन करने की विधा है। यह ऐसा विज्ञान है जिसके द्वारा राज्य तथा शासन के विविध पक्षों का अध्ययन किया जाता है। इसे राजनीति विज्ञान भी कहा जाता है जिसमें राज्य, उसके अंगों एवं प्रकारों, उसके संगठन की प्रणालियों, उसके कार्यों के विविध सिद्धान्तों एवं उद्देश्यों का शास्त्रीय अध्ययन किया जाता है।"(1) राजनीति शास्त्र का अध्ययन क्षेत्र बहुत विशाल है। "राजनीति शास्त्र के अध्ययन का क्षेत्र राज्य, सरकार तथा मनुष्य का राजनीतिक व्यवहार है। यह राज्य एवं मनुष्य की राजनीतिक क्रियाओं का सांगोपांग अध्ययन करता है।"(2) राजनीति विज्ञान एक स्वतन्त्र अनुशासन है इसकी अपनी अध्ययन पद्धतियाँ हैं। "किसी भी विज्ञान के लिये आवश्यक है कि उसके विषय के शास्त्रीय ज्ञान के लिये अपनी अध्ययन प्रणाली हो। यही कारण है कि राजनीति शास्त्र की भी अनेक अध्ययन पद्धतियाँ हैं। इन पद्धतियों की रूपरेखा यहाँ प्रस्तुत हैं- प्रयोगात्मक पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, तुलनात्मक पद्धति और निरीक्षणात्मक पद्धति।"(3)

राज्य के कार्यों की व्याख्या ही राजनीति विज्ञान का अध्ययन क्षेत्र है। "कुछ ऐसे अनिवार्य कार्य हैं जिन्हें राज्य को करना ही पड़ता है; अधिकांश आधुनिक राज्यों द्वारा ये कार्य किये जाते हैं। दूसरे कोटि के राज्य के वे कर्त्तव्य हैं जो उसके लिये वैकल्पिक हैं जिन्हें सम्पन्न करना राज्य की स्थिति, इच्छा अथवा उसके उपलब्ध साधनों पर निर्भर रहता है।"(4) "राज्य के अनिवार्य कार्यों का दायरा इस प्रकार है- राज्य का राज्य से सम्बन्ध, राज्य का नागरिकों से सम्बन्ध तथा नागरिक का नागरिक/नागरिकों से सम्बन्ध। उपरोक्त तीनों दायरों में सम्मिलित होने वाले कार्य राज्य के अनिवार्य कार्य माने जाते हैं।"(5) "राज्य के ऐच्छिक अथवा वैकल्पिक कार्य वे हैं जिन पर राज्य का अस्तित्व टिका हुआ नहीं रहता किन्तु राज्य इनका पालन सार्वजनिक भावना से करता है। ऐच्छिक कार्यों की सामान्य सूची इस प्रकार है- समाज के निर्धन वर्ग के लोगों की सहायता, सार्वजनिक उद्यानों, वाचनालयों की स्थापना, स्वास्थ्य रक्षा, सफाई, नहरों एवं सड़कों का निर्माण, जन-गणना, व्यापार का संचालन, रेल, तार, डाक की व्यवस्था इत्यादि।"(6)

ज्योतिष शास्त्र

ज्योतिष शास्त्र क्या है ? इसे इस प्रकार समझ सकते हैं। "आकाश में विद्यमान प्रकाशपुंजों से सम्बन्धित ज्ञान ही ज्योतिष शास्त्र है। जिसमें सौरमण्डल के ग्रहों एवं नक्षत्रों आदि की गतिविधियों, उनके आपसी सम्बन्धों और पृथ्वी के वातावरण, वृक्षों, वनस्पतियों एवं जीवधारियों पर पड़ने वाले प्रभावों और उनकी उचित-अनुचित प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें विपल, पल, घटी, अहोरात्र, मास, संवत्सर, युग, महायुग आदि का भी सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन किया गया है।"(7) राजनीति शास्त्र की भांति ज्योतिष शास्त्र का क्षेत्र भी बहुत व्यापक है। "ज्योतिष शास्त्र में ग्रह-नक्षत्रादि के अच्छे

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

प्रभावों से लाभ उठाने और हानिकारक तत्वों से बचने के उपायों का भी अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्र में एक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन भी प्राचीन काल से ही समाहित था जिसके सहारे प्रकृति की हलचलों में भी परिवर्तन के विषय में सोचा जाता था एवं उनके आध्यात्मिक उपचारों की भी व्यवस्था बनायी जाती थी। आज भारतीय ज्योतिष की कार्यपद्धति बदली है। विज्ञान, मौसम, भूगोल, भूगर्भ, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में भी इसकी उपयोगिता सिद्ध हो रही है तथा इसका अध्ययन भी महत्त्वपूर्ण समझा जाने लगा है। सिद्धान्त, होरा, संहिता, प्रश्न और शकुन इन पंचस्कन्धों को ज्योतिष शास्त्र का अङ्ग माना जाता है"।(8) ज्योतिष शास्त्र, मानव शरीर और अन्तरिक्ष के मध्य अंतर-सम्बन्ध देखकर जीवन की सम्भावनाओं की व्याख्या करता है। "मानव शरीर पाँच भौतिक तत्वों से निर्मित है। जिन तत्वों के विलक्षण शक्तिदायक हमारे पाँच ग्रह माने जाते हैं मंगल, बुध, गुरू, शुक्र और शनि। इन पाँच तत्वों को जीवनशैली प्रदान करने वाले सूर्य एवं चन्द्रमा होते हैं इन्हीं सातों ग्रहों के प्रभाव से सृष्टि संचालन होता है। मानव शरीर के तत्व रूप में इन्हीं ग्रहों का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में प्रतीत होता है। शरीर के संचालन में मंगल- अग्नि तत्व कारक है, बुध- पृथ्वी तत्व कारक, गुरु- आकाश तत्व कारक, शुक्र- जल तत्व कारक, एवं शनि- वायु तत्व कारक हैं"(9)

राजनीति विज्ञान और ज्योतिष शास्त्र में सम्बन्ध

"राजनीतिशास्त्र समाज के एक पक्ष - राजनीतिक जीवन - का अध्ययन करता है। किन्तु समाज के विविध पक्ष भी हैं जिनका अध्ययन अन्य विषय करते हैं इसलिये यह स्वाभाविक ही है कि राजनीतिशास्त्र इस कार्य में स्वतः को अन्य विज्ञानों से पृथक् नहीं कर सकता। समाज के विविध पक्षों- सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक अथवा भौगोलिक-का अध्ययन तत्सम्बन्धी विषयों, जैसे कि समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, नीतिशास्त्र, मनोविज्ञान अथवा भूगोल द्वारा किया जाता है। अतः समाज के राजनीतिक पक्षों के अध्ययन के प्रयास में राजनीतिशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होता है।" (10) ठीक इसी प्रकार राजनीति शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र का भी आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि इनके अध्ययन के क्षेत्र एक ही हैं। राज्य, मानव के कल्याण के लिए कार्य करता है। मानव समुदाय के भोजन की व्यवस्था करना राज्य का कार्य है। भोजन का एक बड़ा हिस्सा कृषि से आता है। ज्योतिष के संहिता स्कन्ध में कृषि उत्पादन से सम्बन्धित गहरी चर्चा की गई है। राज्य मानव समुदाय के लिए रोगों से बचाव की व्यवस्था करता है वहीं ज्योतिष शास्त्र मनुष्य की जन्म कुंडली देखकर उसको होने वाले रोगों की सम्भावित व्याख्या करता है। प्राचीन भारत में राज्य के संचालन में ज्योतिषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। "ज्योतिषी राजनीतिक सत्ता के समर्थक थे। वे युद्ध क्षेत्र में राजा के देवत्व की घोषणा करते थे और सैनिकों के विजय की सम्भावनायें व्यक्त करते थे। हर्ष के ज्योतिषियों ने उसे चतुर्दिक विजय दिलाने के लिए शुभ दिन एवं लग्न निश्चित किए थे। पूर्व मध्यकालीन युद्ध के वातावरण में अपने समर्थक राजाओं एवं राजकुमारों की इच्छा शक्ति को सम्वर्द्धित करने वालों में ज्योतिषी विशेष महत्वपूर्ण हो गये थे। 'वृहत्संहिता' एवं 'कामंदक नीतिसार' में राजा द्वारा ज्योतिष विशेषज्ञों के नियुक्ति का विधान है।"(11)

राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र की परिकल्पना

समस्त जीव-जगत जिसमें की मनुष्य भी सम्मिलित है ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत ही समाहित होता है। इसीलिए ब्रह्माण्ड या अन्तरिक्ष में घटने वाली कोई भी घटना सृष्टि के सम्पूर्ण जीव-जगत को प्रभावित

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

करती है। **ब्रह्माण्ड, पर्यावरण को प्रभावित करता है। पर्यावरण से राजनीतिक व्यवस्था प्रभावित होती है और राजनीतिक व्यवस्था से मानव जगत प्रभावित होता है।** अतः यह कह सकते हैं कि ब्रह्माण्ड अप्रत्यक्ष रूप से मानव जगत को प्रभावित करता है। चूँकि ब्रह्माण्ड की संरचना और उसकी कार्य-पद्धति का सुव्यवस्थित अध्ययन 'ज्योतिष शास्त्र' करता है और राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन 'राजनीति शास्त्र' करता है, अतः ये कह सकते हैं कि राजनीति शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र के संयुक्त अध्ययन से एक नए अनुशासन '**राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र**' को जन्म को देकर मानव जगत की कठिनाइयों को कम कर सकते हैं। राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र अध्ययन का एक ऐसा विषय है जो राजनीति शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र की सीमाओं को स्पर्श करता है। इसकी विषय-वस्तु दोनों विषयों के विचार क्षेत्र में आती है। **"राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र को परिभाषित करते हुये कहा जा सकता है, राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत राजनीति शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र के मूल बिन्दुओं को समाहित करके ब्रह्माण्ड व मानव समाज की संरचना का समाकलित अध्ययन किया जा सकता है।"**[12]

निष्कर्ष

"सम्राट अशोक ने उज्जैन में प्रजा के लिए खगोल विज्ञान के विश्वविद्यालय का निर्माण किया था।"[13] इससे यह प्रमाणित होता है कि ज्योतिष शास्त्र किसी के मस्तिष्क की कल्पना नहीं है, इसके इतिहास की पूर्ण श्रृंखला है ठीक वैसे ही जैसे राजनीति विज्ञान या राजनीति शास्त्र की। राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र के उद्गम से मानव जीवन की कई समस्याओं का निराकरण संभव हो पाएगा। वर्तमान में राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र के विविध आयामों पर और अधिक शोध, चिन्तन एवं विकास की आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. **पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-1, राजनीतिशास्त्र : अर्थ और क्षेत्र, पृष्ठ-3 राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर**
2. **पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-1, राजनीतिशास्त्र : अर्थ और क्षेत्र, पृष्ठ-8, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर**
3. **पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-2, राजनीतिशास्त्र की अध्ययन-पद्धतियाँ, पृष्ठ-22, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर**
4. **पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-10, राज्य का औचित्य, उसके उद्देश्य,एवं कार्य, पृष्ठ-168, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर**
5. **पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-10, राज्य का औचित्य, उसके उद्देश्य,एवं कार्य, पृष्ठ-169, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर**
6. **पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-10, राज्य का औचित्य, उसके उद्देश्य,एवं कार्य, पृष्ठ-179, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर**

7. राय, ज्योति, वैदिक ज्योतिष: आधुनिक और वैज्ञानिक विश्लेषण (शोध-प्रबन्ध), 2007, द्वितीय परिच्छेद : ज्योतिष एक परिचय, पृष्ठ-63, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर http://hdl.handle.net/10603/177407
8. राय, ज्योति, वैदिक ज्योतिष: आधुनिक और वैज्ञानिक विश्लेषण (शोध-प्रबन्ध), 2007, द्वितीय परिच्छेद : ज्योतिष एक परिचय, पृष्ठ-64, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
http://hdl.handle.net/10603/177407
9. झा, प्रशांत कुमार, मानसिक विकलांगता का ज्योतिषीय अध्ययन (शोध-प्रबन्ध), 2018, प्रथम अध्याय- ज्योतिषशास्त्रीय जातकस्कन्ध का अनुशीलन, पृष्ठ-1, ज्योतिष विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 221005
http://hdl.handle.net/10603/472315
10. पुराहित, बी. आर., (चतुर्थ संस्करण-2013), राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त, अध्याय-1, राजनीतिशास्त्र : अर्थ और क्षेत्र, पृष्ठ- 11-12, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
11. शुक्ला, मन्जू, पूर्व मध्यकालीन भारत में ज्योतिष एवं भविष्य कथन का ऐतिहासिक अध्ययन (शोध-प्रबन्ध), 2008, तृतीय अध्याय, ज्योतिष एवं राजनीतिक जीवन, पृष्ठ- 116, प्राचीन इतिहास विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
http://hdl.handle.net/10603/179752
12. शर्मा, विशाल, महाकुम्भ और राजनीतिक ज्योतिष शास्त्र (शोध-पत्र), Science, spirituality and Tradition at Mahakumbh, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के रसायन विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 24-25 फरवरी, 2025 को प्रस्तुत शोध-पत्र
13. In touch with Ujjain, Keshavrao Balwant dongray, page 66
adopted from, सम्राट असोक और उनका स्वर्णिम प्रबुद्ध भारत, डॉ. सत्यजित गौरीशंकर चन्द्रिका पुरे, सम्यक प्रकाशन, 32/3 पश्चिम पुरी, नई दिल्ली